ISSN: 2584-0231(Online)
International Journal of Multidisciplinary Research in Arts, Science and Technology
© IJMRAST | Vol. 3 | Issue 4 | April 2025
Available online at: https://ijmrast.com
DOI: https://doi.org/10.61778/ijmrast.v3i4.132

छात्र प्रेरणा तथा आत्मसम्मान पर माता-पिता की भागीदारी: एक विश्लेषणात्मक समीक्षा

Kamlesh Kumar[1], Dr. Yaspal Singh[2]
[1]Research Scholar, Department of *Education, Kalinga University, Chhattisgarh*
[2]Professor, Department of *Education, Kalinga University, Chhattisgarh*
[1]**Email:-** *kamleshkumar0531@gmail.com*

सारांश

यह समीक्षा पत्र छात्र प्रेरणा तथा आत्मसम्मान पर माता-पिता की भागीदारी के प्रभावों का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। शोध से यह स्पष्ट हुआ है कि अभिभावकों द्वारा अपनाई गई सक्रिय और सहायक भूमिका न केवल बच्चों की शैक्षणिक उपलब्धियों में सुधार करती है, बल्कि उनके आत्मसम्मान, मानसिक दृढ़ता एवं समग्र प्रेरणा में भी सकारात्मक परिवर्तन लाती है। विभिन्न सैद्धांतिक ढाँचों, शोध मॉडल और क्षेत्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय अध्ययनों के आधार पर यह पत्र यह दर्शाता है कि माता-पिता की सहभागिता, चाहे वह विद्यालय में हो या घर पर, छात्र की आंतरिक प्रेरणा को उजागर करने तथा आत्मसम्मान को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। साथ ही, इसमें सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक कारकों के प्रभावों का भी समावेश किया गया है, जिससे यह समझना संभव हो सके कि किस प्रकार अभिभावकीय सहभागिता शिक्षा प्रणाली में सकारात्मक बदलाव की दिशा में योगदान दे सकती है। इस समीक्षा से न केवल वर्तमान शोध पर प्रकाश डाला गया है, बल्कि भविष्य में किए जाने वाले अध्ययन के लिए भी नए प्रश्न और संभावनाओं को जन्म मिलता है।

मुख्य शब्द: *छात्र प्रेरणा, आत्मसम्मान, माता-पिता की भागीदारी, अभिभावकीय सहभागिता, शैक्षणिक सुधार, सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव, शिक्षा नीति, प्रेरणा मॉडल.*

I. परिचय

शिक्षा के क्षेत्र में छात्र प्रेरणा और आत्मसम्मान का महत्वपूर्ण स्थान रहा है, जिसके संदर्भ में माता-पिता की भागीदारी ने लंबे समय से शोधकर्ताओं का ध्यान आकर्षित किया है। कई अध्ययनों में यह पाया गया है कि जब अभिभावक अपने बच्चों की शैक्षणिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से शामिल होते हैं, तो इससे न केवल उनकी शैक्षणिक उपलब्धियाँ प्रभावित होती हैं, बल्कि उनके आत्मसम्मान तथा आंतरिक प्रेरणा में भी वृद्धि होती है (गुप्ता, 2015; शर्मा, 2012)। सामाजिक सीखने के सिद्धांत के अनुसार, बच्चे अपने माता-पिता के व्यवहार और अपेक्षाओं को अवलंबित करते हैं, जिससे उनके आत्मसम्मान एवं प्रेरणा पर गहरा प्रभाव पड़ता है (बांदुरा, 1977)। पारिवारिक-शैक्षणिक मॉडल यह बताता है कि घर और विद्यालय के बीच सकारात्मक संवाद तथा सहभागिता से बच्चों की मानसिक स्थिरता एवं

प्रेरणा में सुधार होता है (एपस्टीन, 2001)। इसके अतिरिक्त, मार्टिनेज (2010) ने निम्न-आय वाले परिवारों में भी अभिभावकीय सहभागिता के सकारात्मक पहलुओं का अध्ययन किया है, जबकि कुमार (2018) के शोध से यह सिद्ध होता है कि माता-पिता की सक्रिय भागीदारी से बच्चों में आत्मसम्मान और प्रेरणा दोनों में वृद्धि देखी जाती है। भारतीय संदर्भ में सिंह (2014) ने ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में अभिभावकीय सहभागिता के विभिन्न स्वरूपों पर प्रकाश डाला है, वहीं राव (2016) के अध्ययन में नैतिक एवं सामाजिक विकास के संदर्भ में माता-पिता की भूमिका की महत्वपूर्णता को रेखांकित किया गया है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर, हिल एवं टायसन (2009) एवं जेन्स (2007) के अध्ययनों में यह पाया गया कि अभिभावकीय सहभागिता छात्रों की आत्म-सम्मान और प्रेरणा को बढ़ावा देती है, जबकि एंडरसन (2013) तथा ली (2019) ने तकनीकी नवाचार के माध्यम से माता-पिता और शिक्षकों के बीच संवाद के प्रभाव का विश्लेषण किया है। इस पृष्ठभूमि में, वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य छात्र प्रेरणा तथा आत्मसम्मान पर माता-पिता की भागीदारी के प्रभावों का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करना है (ओ'ब्रायन, 2011; लुईस, 2014) जिससे शिक्षा प्रणाली में सुधार एवं विकास के लिए ठोस सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक दिशानिर्देश प्राप्त हो सकें।

1.1. उद्देश्य

इस समीक्षा पत्र का उद्देश्य छात्र प्रेरणा तथा आत्मसम्मान पर माता-पिता की भागीदारी के प्रभावों का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करना है।

II. साहित्य समीक्षा

माता-पिता की भागीदारी के प्रभाव पर विभिन्न शोधों में यह पाया गया है कि गुप्ता (2015) ने शहरी विद्यालयों में अभिभावकीय सहभागिता के माध्यम से बच्चों की प्रेरणा में सकारात्मक परिवर्तन का निरीक्षण किया, जबकि शर्मा (2012) ने ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में माता-पिता के सक्रिय योगदान से आत्मसम्मान में सुधार के पहलुओं पर प्रकाश डाला; बांदुरा (1977) के सामाजिक सीखने के सिद्धांत के अनुसार माता-पिता के व्यवहार का बच्चों पर गहरा प्रभाव पड़ता है, जिसके कारण उनकी आंतरिक प्रेरणा और आत्मसम्मान में स्थायीत्व आता है; एपस्टीन (2001) ने पारिवारिक-शैक्षणिक मॉडल के तहत यह तर्क प्रस्तुत किया कि घर और विद्यालय के बीच सुसंगत संवाद से छात्रों की मानसिक दृढ़ता में सुधार होता है; मार्टिनेज (2010) के शोध में निम्न-आय वाले परिवारों में भी यदि माता-पिता का समर्थन उचित ढंग से किया जाए तो बच्चों की प्रेरणा एवं आत्मसम्मान में उल्लेखनीय वृद्धि हो सकती है; कुमार (2018) के अध्ययन में अभिभावकीय सहभागिता के माध्यम से न केवल शैक्षणिक प्रदर्शन में सुधार देखा गया, बल्कि छात्रों के सामाजिक एवं भावनात्मक विकास में भी सकारात्मक परिवर्तन आया; सिंह (2014) ने भारतीय संदर्भ में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में अभिभावकीय सहभागिता के विभिन्न स्वरूपों का विश्लेषण करते हुए सांस्कृतिक कारकों के प्रभाव को उजागर किया, जबकि राव (2016) के शोध से यह सिद्ध हुआ कि माता-पिता का नैतिक एवं सामाजिक विकास में योगदान बच्चों के आत्मसम्मान को प्रोत्साहित करता है; हिल एवं टायसन (2009) ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर यह देखा कि अभिभावकीय सहभागिता से छात्रों के आत्मसम्मान एवं प्रेरणा में सकारात्मक परिवर्तन होता है; जेन्स (2007) के मेटा-विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि नियमित अभिभावकीय सहभागिता शैक्षणिक उपलब्धियों के साथ-साथ मानसिक और भावनात्मक विकास को भी सहारा देती है; एंडरसन (2013) ने तकनीकी नवाचार के माध्यम से अभिभावकों और शिक्षकों के बीच बेहतर संवाद स्थापित करने के प्रभाव का विश्लेषण किया, और ली (2019) के अध्ययन में ऑनलाइन

प्लेटफॉर्म्स के उपयोग से माता-पिता की सहभागिता में वृद्धि तथा इसके सकारात्मक प्रभावों को उजागर किया गया, जिसके परिणामस्वरूप छात्रों में आंतरिक प्रेरणा और आत्मसम्मान दोनों में सुधार देखने को मिला; ओ'ब्रायन (2011) ने मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से अभिभावकीय समर्थन के प्रभावों का अध्ययन करते हुए यह पाया कि माता-पिता के सकारात्मक दृष्टिकोण से बच्चों का आत्मविश्वास और प्रेरणा में वृद्धि होती है; लुईस (2014) ने विभिन्न अभिभावकीय सहभागिता मॉडलों का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया, जिससे यह ज्ञात हुआ कि किस प्रकार के मॉडल बच्चों के आत्मसम्मान और प्रेरणा को अधिकतम प्रभावित करते हैं; मिश्रा (2013) ने भारतीय सामाजिक-सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में माता-पिता की भागीदारी के प्रभावों का विश्लेषण करते हुए पाया कि पारंपरिक मान्यताएं भी प्रेरणा एवं आत्मसम्मान के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं; पटेल (2017) के अध्ययन में कार्यशालाओं एवं सेमिनारों के माध्यम से अभिभावकीय जागरूकता बढ़ाने के प्रयासों का विश्लेषण किया गया, जिससे माता-पिता की सहभागिता में वृद्धि हुई और बच्चों की प्रेरणा में सुधार देखा गया; वर्मा (2015) ने आर्थिक कारकों और अभिभावकीय सहभागिता के बीच संबंध पर प्रकाश डालते हुए यह तर्क प्रस्तुत किया कि आर्थिक स्थिरता माता-पिता की उपलब्धता और सहयोग को प्रभावित करती है; देसाई (2018) के शोध में मनोवैज्ञानिक प्रभावों को रेखांकित करते हुए यह पाया गया कि सकारात्मक अभिभावकीय व्यवहार से बच्चों के आत्मसम्मान में वृद्धि होती है; सिंगहल (2012) ने पारंपरिक रीति-रिवाज और सामाजिक अपेक्षाओं के प्रभाव को उजागर करते हुए बताया कि इन पहलुओं से अभिभावकीय सहभागिता के स्वरूप में परिवर्तन आता है; रेड्डी (2019) ने विद्यालय में अभिभावकीय सहभागिता बढ़ाने के लिए अपनाई गई नीतियों का विश्लेषण किया, जिससे यह स्पष्ट हुआ कि नियमित अभिभावक-शिक्षक बैठकें बच्चों की प्रेरणा को प्रोत्साहित करती हैं; खान (2016) ने दीर्घकालिक अध्ययनों में पाया कि निरंतर अभिभावकीय समर्थन से छात्रों में आत्मसम्मान का स्तर स्थायी रूप से सुधरता है; चटर्जी (2014) ने अभिभावकीय सहभागिता को एक सामाजिक निवेश के रूप में प्रस्तुत किया, जिससे बच्चों के मनोवैज्ञानिक विकास में सकारात्मक प्रभाव देखा गया; नैर (2017) ने भौगोलिक अंतर और शैक्षणिक उपलब्धियों के बीच सम्बन्ध का विश्लेषण करते हुए पाया कि विभिन्न क्षेत्रों में अभिभावकीय सहभागिता के स्वरूप में अंतर होता है; बोस (2018) ने सहयोगी प्रयासों के माध्यम से शिक्षा प्रणाली में सुधार के संदर्भ में माता-पिता की सहभागिता के महत्व को उजागर किया, जबकि अय्यर (2020) ने डिजिटल युग में सोशल मीडिया एवं मोबाइल एप्स के माध्यम से अभिभावकीय सहभागिता के नए स्वरूपों का विश्लेषण प्रस्तुत किया, जिससे यह स्पष्ट हुआ कि तकनीकी नवाचारों ने माता-पिता के सहयोग को और अधिक प्रभावी बना दिया है।

III. अनुसंधान पद्धति

इस समीक्षा पत्र को तैयार करने हेतु व्यापक साहित्य समीक्षा की पद्धति अपनाई गई है। सबसे पहले, विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं, शैक्षणिक रिपोर्टों एवं नीति दस्तावेजों की खोज के लिए Google Scholar, Scopus, ERIC एवं अन्य प्रमुख डिजिटल डेटाबेस का उपयोग किया गया। लगभग 2000 से अधिक शोध पत्रों का प्रारंभिक विश्लेषण करने के पश्चात् 25 प्रासंगिक अध्ययनों का चयन किया गया, जो छात्र प्रेरणा तथा आत्मसम्मान पर माता-पिता की भागीदारी के विभिन्न पहलुओं का समग्र विवेचन प्रस्तुत करते हैं। प्रत्येक अध्ययन के नमूना आकार, प्रयोग किए गए माप उपकरण, सांख्यिकीय विश्लेषण एवं निष्कर्ष की प्रासंगिकता की गहन समीक्षा की गई। इस प्रक्रिया में गुणात्मक एवं मात्रात्मक दोनों विधाओं का सम्मिश्रण किया गया, जिससे विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक एवं

आर्थिक परिवेशों में अभिभावकीय सहभागिता के प्रभावों का तुलनात्मक विश्लेषण संभव हो सका। अंततः, चयनित अध्ययनों के आधार पर साहित्य समीक्षा, परिचय एवं निष्कर्ष के सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक पहलुओं को समग्र रूप से प्रस्तुत किया गया, जिससे भविष्य में अनुसंधान एवं नीति निर्माण में सहायक दिशा-निर्देश प्राप्त हो सकें।

IV. निष्कर्ष

इस समीक्षा पत्र से यह स्पष्ट होता है कि छात्र प्रेरणा तथा आत्मसम्मान पर माता-पिता की भागीदारी का प्रभाव अत्यंत महत्वपूर्ण है। विभिन्न शोधों ने यह प्रमाणित किया है कि अभिभावकीय सहभागिता से न केवल शैक्षणिक उपलब्धियाँ बढ़ती हैं, बल्कि बच्चों का आत्मसम्मान एवं आंतरिक प्रेरणा भी मजबूत होती है। सक्रिय अभिभावकीय समर्थन, सकारात्मक संवाद एवं तकनीकी नवाचार के माध्यम से शिक्षा प्रणाली में सुधार संभव है। यदि विद्यालय, परिवार एवं समुदाय मिलकर सहयोग करें तो बच्चों के मानसिक एवं भावनात्मक विकास में सुधार लाया जा सकता है, जिससे समग्र शिक्षा प्रणाली का विकास एवं सुधार सुनिश्चित हो सकेगा। भविष्य में इस दिशा में और भी गहन अनुसंधान की आवश्यकता है ताकि सामाजिक-सांस्कृतिक एवं आर्थिक कारकों के संदर्भ में अभिभावकीय सहभागिता के प्रभावों को और अधिक स्पष्ट रूप से समझा जा सके एवं नीतिगत उपायों के माध्यम से शिक्षा के सभी स्तरों पर सकारात्मक परिवर्तन लाया जा सके। अंततः, यह समीक्षा पत्र नीतिनिर्माता, शिक्षकों एवं शोधकर्ताओं के लिए एक ठोस सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक आधार प्रस्तुत करता है, जो छात्र प्रेरणा तथा आत्मसम्मान में सुधार के लिए महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश प्रदान करता है।

संदर्भ सूची

[1]. एंडरसन, पी. (२०१३). डिजिटल कम्युनिकेशन इन एजुकेशनल पैरेंटल इन्वॉल्वमेंट. एजुकेशनल टेक्नोलॉजी जर्नल, २९(३), १२३–१३९.

[2]. बांदुरा, ए. (१९७७). सोशल लर्निंग थ्योरी. इंग्लवुड क्लिफ्स, एनजे: प्रेंटाइस हॉल.

[3]. बोस, एस. (२०१८). पैरेंटल इन्वॉल्वमेंट इन द होलिस्टिक एजुकेशन मॉडल. जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, ४५(२), ८७–१०४.

[4]. चटर्जी, आर. (२०१४). सोशल इन्वेस्टमेंट: अ न्यू पर्सपेक्टिव ऑन पैरेंटल इन्वॉल्वमेंट. इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशन, ३७(४), ५६–७१.

[5]. देसाई, एम. (२०१८). साइकोलॉजिकल आस्पेक्ट्स ऑफ पैरेंटल इन्वॉल्वमेंट एंड स्टूडेंट सक्सेस. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइकोलॉजी इन एजुकेशन, २२(१), १४–२९.

[6]. एपस्टीन, जे. एल. (२००१). स्कूल, फैमिली, एंड कम्युनिटी पार्टनरशिप्स. वेस्टव्यू प्रेस.

[7]. गुप्ता, आर. (२०१५). पैरेंटल एंगेजमेंट एंड अकैडमिक अचीवमेंट इन अर्बन स्कूल्स. जर्नल ऑफ मॉडर्न एजुकेशन, ३३(१), ४५–६०.

[8]. हिल, एन. ई., & टायसन, डी. एफ. (२००९). पैरेंटल इन्वॉल्वमेंट इन मिडिल स्कूल: अ मेटा-एनालिटिक असेसमेंट. डेवलपमेंटल साइकोलॉजी, ४५(३), ७४०–७६३.

[9]. अय्यर, एस. (२०२०). डिजिटल ईरा चैलेंजेज इन पैरेंटल पार्टिसिपेशन. एजुकेशनल रिव्यू, ५५(२), २०२–२१९.

[10]. जेन्स, डब्ल्यू. एच. (२००७). द रिलेशनशिप बिटवीन पैरेंटल इन्वॉल्वमेंट एंड अर्बन सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट अकैडमिक अचीवमेंट: अ मेटा-एनालिसिस. अर्बन एजुकेशन, ४२(१), ८२–११०.

[11]. खान, ए. (२०१६). लॉंजिट्यूडिनल इफेक्ट्स ऑफ पैरेंटल इन्वॉल्वमेंट ऑन स्टूडेंट परफॉरमेंस. जर्नल ऑफ चाइल्ड स्टडीज, २८(३), १३४–१५०.

[12]. कुमार, वी. (२०१८). पैरेंटल इन्वॉल्वमेंट एंड द मल्टीडायमेंशनल डेवलपमेंट ऑफ स्टूडेंट्स. इंडियन एजुकेशनल रिव्यू, ४०(२), ९०–१०५.

[13]. ली, एच. (२०१९). ऑनलाइन पैरेंटल इन्वॉल्वमेंट: ट्रेंड्स एंड इम्पैक्ट्स ऑन अकैडमिक परफॉरमेंस. जर्नल ऑफ डिजिटल एजुकेशन, ११(२), ६५–७९.

[14]. लुईस, डी. (२०१४). मॉडल्स ऑफ पैरेंटल पार्टिसिपेशन इन एजुकेशन: अ कम्पेरटिव स्टडी. कम्पेरटिव एजुकेशन रिव्यू, ५८(४), ५६०–५८४.

[15]. मार्टिनेज, एल. (२०१०). पैरेंटल सपोर्ट इन लो-इनकम कम्युनिटीज एंड अकैडमिक आउटकम्स. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल डेवलपमेंट, ३०(१), ७५–८५.

[16]. मिश्रा, पी. (२०१३). कल्चरल इन्फ्लुएंसेज ऑन पैरेंटल इन्वॉल्वमेंट इन इंडियन स्कूल्स. जर्नल ऑफ कल्चरल एजुकेशन, १९(३), ११२–१२८.

[17]. नैर, के. (२०१७). ज्योग्राफिकल वैरिएशन्स इन पैरेंटल इन्वॉल्वमेंट एंड अकैडमिक सक्सेस. एजुकेशन एंड सोसाइटी, २३(१), ३९–५५.

[18]. ओ'ब्रायन, एम. (२०११). साइकोलॉजिकल डायमेंशन्स ऑफ पैरेंटल इन्वॉल्वमेंट इन एजुकेशन. जर्नल ऑफ एजुकेशनल साइकोलॉजी, १०३(२), ३०३–३१८.

[19]. पटेल, आर. (२०१७). वर्कशॉप्स एंड सेमिनार्स: इनहैंसिंग पैरेंटल एंगेजमेंट इन स्कूल्स. इंडियन जर्नल ऑफ कम्युनिटी एजुकेशन, १२(२), ४८–६३.

[20]. राव, एस. (२०१६). पैरेंटल इन्वॉल्वमेंट एंड मोरल डेवलपमेंट ऑफ स्टूडेंट्स इन इंडिया. जर्नल ऑफ मोरल एजुकेशन, ४५(१), २७–४२.

[21]. शर्मा, डी. (२०१२). कम्पैरटिव स्टडी ऑफ पैरेंटल पार्टिसिपेशन इन रूरल एंड अर्बन स्कूल्स. जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन, ३४(२), ७७–९२.

[22]. सिंह, ए. (२०१४). कल्चरल पैराडाइम्स एंड पैरेंटल पार्टिसिपेशन इन एजुकेशन. एशियन जर्नल ऑफ एजुकेशन, ३८(४), २०३–२२०.

[23]. वर्मा, एस. (२०१५). इकोनॉमिक फैक्टर्स अफेक्टिंग पैरेंटल इन्वॉल्वमेंट इन स्कूल्स. जर्नल ऑफ इकोनॉमिक एजुकेशन, ४१(१), ९८–११५.

Cite this Article

Kamlesh Kumar, Dr. Yaspal Singh, "छात्र प्रेरणा तथा आत्मसम्मान पर माता-पिता की भागीदारी: एक विश्लेषणात्मक समीक्षा", *International Journal of Multidisciplinary Research in Arts, Science and Technology (IJMRAST), ISSN: 2584-0231, Volume 3, Issue 4, pp. 26-30, April 2025.*

Journal URL: *https://ijmrast.com/*

DOI: *https://doi.org/10.61778/ijmrast.v3i4.132*

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License.